ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 17 अंक 05 कुल पृष्ठ-8 28 अप्रैल से 4 मई, 2022 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853123 सम्वत् 2079 वै.कृ.-12

आर्य समाज महर्षि दयानन्द धाम, अमृतसर, पंजाब के तत्वावधान में गरीब परिवारों को राशन वितरण कार्यक्रम का भव्य आयोजन हुआ सम्पन्न

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का रहा मुख्य उद्बोधन

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट रहे विशिष्ट अतिथि

सभा मंत्री श्री ओम प्रकाश ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की

आर्य समाज महर्षि दयानन्द धाम, कटरा हंसली, अमृतसर, पंजाब के तत्वावधान में 24 अप्रैल, 2022 को आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में एक भव्य आयोजन किया गया। जिसमें 50 गरीब परिवारों को राशन प्रदान करके सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट, श्री सुलक्षण सरीन एडवोकेट, नवांशहर, सभा के उपप्रधान श्री अरविन्द मेहता एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मधुर भाषिणी दीनानगर आदि महानुभाव विशेष रूप से सम्मिलित हुए। इस पूरे आयोजन की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री ओम प्रकाश आर्य ने की तथा कुशल संयोजन आयुर्वेदाचार्य एवं योगाचार्य डॉ. नवीन कुमार आर्य ने संभाला। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातः 9 बजे से यज्ञ के द्वारा हुआ। यज्ञ का पौरोहित्य दयानन्द धाम के धर्माचार्य श्री दयानन्द शास्त्री जी ने किया। यज्ञ में उपस्थित आर्यजनों ने आहुतियाँ प्रदान करके वेद प्रचार तथा सेवा का संकल्प लिया। यज्ञ के उपरान्त 50 ऐसे परिवारों को राशन वितरित किया गया जो असहाय एवं आर्थिक रूप से पीड़ित थे। प्रत्येक परिवार को आटा, दाल, चावल, चीनी एवं सरसों का तेल प्रदान करके उन्हें सम्मानित किया। विदित हो कि महर्षि दयानन्द धाम की ओर से गत् 18 महीने से निरन्तर राशन वितरण का यह अभिनव कार्यक्रम निरन्तर चल रहा है और हजारों परिवारों को यह सहायता प्रदान की जा चुकी है। श्री ओम प्रकाश आर्य जी के नेतृत्व में महर्षि दयानन्द की पूरी टीम इस कार्य में निष्ठा के साथ लगी हुई है।

इस अवसर पर अपने मुख्य उद्बोधन में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने जीवन में सेवा, परोपकार, त्याग तथा समर्पण के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि निराश्रित लोगों को भोजन, वस्त्र, औषधि आदि देकर उनकी सहायता करना एक उच्चकोटि का परोपकार है। सेवा से ही मनुष्य के जीवन में निरभिमानता आती है। परोपकार करने से प्राणियों के प्रति मित्रभाव उत्पन्न होता है। त्याग एवं समर्पण से निष्कामता मिलती है और जिस व्यक्ति के जीवन में निरभिमानता, मैत्री तथा निष्काम भाव आ जाता है वह मनुष्य जीवन के लक्ष्य पुरुषार्थ चतुष्ट, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को प्राप्त करने का अधिकारी हो जाता है। स्वामी जी ने महर्षि दयानन्द धाम द्वारा किये जा रहे सेवा एवं परोपकार के कार्य के लिए सभी कार्यकर्ताओं, माताओं, बहनों तथा दानी महानुभावों को साधुवाद दिया। उन्होंने आगे कहा कि वैदिक संस्कृति त्याग पर आधारित संस्कृति है जिसमें औरों के दुःखों को मिटाने के लिए सेवा तथा त्याग करना पड़ता है। वैदिक संस्कृति में स्वार्थ की बजाय परमार्थ की प्रधानता है और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने तो मनुष्य की परिभाषा करते हुए कहा है कि – मनुष्य उसी को कहना जो मननशील होकर अन्यों के सुख–दुःख को अपना सुख–दुःख समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और निर्बल धर्मात्मा से डरता रहे। .इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे वे महा अनाथ निर्बल और गुणरहित क्यों न हों उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथ महाबलवान् और गुणवान् भी तथापि उसका नाश, अवनति अप्रियाचरण सदा किया करें। अर्थात् जहाँ तक हो सके वहाँ तक

शेष पृष्ठ 8 पर

प्राण में भेद

- हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक'

एक प्राण वह है जिससे समस्त प्राणी जगत श्वांस प्रश्वास लेते हैं और दूसरा प्रणव है जिसे प्राणेश्वर कहा जाता है, इस प्रणव को ओ३म् भी कहते हैं। जिससे प्राणी श्वास-प्रश्वास लेते हैं वह एक शक्ति है। यह शक्ति सर्वत्र विद्यमान है उसी से जठराग्नि प्राणियों के शरीर के अन्दर विद्यमान रहता है और जठराग्नि से ही प्राणियों के हृदय की गति = यन्त्र अ विरत चलती रहती है और जीवन कायम रहता है। किन्तु प्राणियों के प्राण में जो आत्मा है उससे उसका अटूट सम्बन्ध रहता है। आत्मा के न रहने पर प्राणियों का प्राण जो एक सूक्ष्म शक्ति है वह आत्मा के साथ चला जाता है। तात्पर्य यह कि जब आत्मा का शरीर से किसी कारणवश वियोग होता है तब वह अपने प्राणों को समेट लेता है और प्राणि मर जाते हैं। प्राण और आत्मा दोनों अमर हैं। आत्मा एक अत्यन्त सूक्ष्मशक्ति है। आत्मा जहाँ जाता है वहाँ उसके साथ सभी मौलिक तत्व अर्थात् शरीर रचने वाली शक्तियाँ उसके साथ चली जाती हैं। जिस प्रकार रानी मधुमक्खी के साथ और मधुमक्खियाँ हैं। जैसे रानी मधुमक्खी जहाँ अपनी नई दुनियाँ बनाने बैठती है वहीं उसके साथ रहने वाली और मधुमक्खियाँ उसके घर बनाने में जुट जाती हैं। उसी प्रकार जब आत्मा का शरीर से सम्बन्ध होता है तब उसका जीवन कार्य प्रारम्भ होने लगता है। उसका प्रथम शरीर वीर्य कोश में उत्पन्न होने लगता है। दूसरा जन्म माता के गर्भाश्य में पलता है और तीसरा जन्म माता के गर्भ से इस दुनिया में आता है। तब उसका प्राण, 'वायुमंडल से श्वांस प्रश्वास लेने लगता है।' अतः प्राण की क्रिया प्रारम्भ हो जाती है। परन्तु इसके पहले धीरे-धीरे उसकी जैसी योनि रहती है वैसा ही उसके गर्भ में ही सर्वांग बनने लगते हैं और अन्दर की शक्ति बाहर के पंचतत्व उपादनों को आकर्षित कर सूक्ष्म शरीर के द्वारा स्थूल शरीर का वह आत्मा विकास करने लगता है। अतः आत्मा पंचतत्व के द्वारा ही शरीर की रचना करता है। वेद ने भी कहा है -

'पंचौदनः पंचधा ..... ' (अथर्व नवम काण्ड)

पांच भूतों से खींचा हुआ (जीवात्मा) पांच प्रकार (गंध, रस, रूप, स्पर्श, शब्द से) तीन (शरीर, इन्द्रिय और विषय) ज्योतियों (दर्शन साधनों) को पाने की इच्छा करता हुआ विक्रम (पराक्रम) करे।

अतः प्राण जीवात्मा का उपकरण है प्राण का कार्य है गर्भ के लिए अण्डे को उत्पन्न करना और शरीर के अन्दरूनी क्रियाओं को सक्रिय रखना और जीवात्मा का कार्य है आयु के अनुसार प्राण से संयुक्त होकर कर्मेन्द्रिय और ज्ञानेन्द्रिय को सक्रिय रखना जब पूर्व जन्म के अनुसार प्राण का कार्य समाप्त हो जाता है। तब उसकी क्रिया बन्द हो जाती है और तब श्वास-प्रश्वास भी बन्द हो जाता है और तब आत्मा का उपकरण का न करने के कारण वह स्वयं इस स्थूल शरीर से पृथक हो जाता है। (मृत्यु का कारण दो ही होते हैं एक बीमारी और दूसरा दुर्घटना। ईश्वर अपने ऊपर दोष नहीं लेता।)

मृत शव में न आत्मा रहता है न प्राण। किन्तु उद्भिज में प्राण रहता है इसलिए उसमें केवल कतृत्व और भोकतृत्व के गुण पाए जाते हैं।

दर्शन शास्त्र में लिखा है कि - प्राण, अपान, पलक मीचना, पलक खोलना, जीवन यह सब प्राण के धर्म हैं। स्पन्दन को ही प्राण कहते हैं। ''फैलना और सिकोड़ना'' इस प्रक्रिया की संज्ञा 'स्पन्दन' है जो वैज्ञानिक कथन के समकक्ष है। जिसे ऋषियों ने इस प्रकार कहा है। प्राणो वै समंचन प्रसारणम्। (शतपथ 8/4/10) फैलना सिकोड़ना 'केन्ट्रैक्शन, एक्सपैन्शन' यह सब क्रियाएं शरीर के अतिरिक्त उद्भिज में भी है।

अथर्ववेद में क्लोरोफिल का वर्णन मिलता है। इसमें क्लोरोफिल के लिए यदि (रक्षकतत्व) शब्द आया है इसकी विशेषता बताई गई है, इसके कारण वृक्ष-वनस्पतियों में हरियाली रहती है।

'अविवैनाम देवता ऋते नास्ते परीकृता। तस्या रुपेण इमं वृक्षा हरिता हरितराजः। (अर्थव. 10/8/31)

अथर्ववेद का कथन है कि वृक्षों में प्राण है और वे सांस लेते हैं। महद्ब्रह्मयेन प्राणन्ति वीरुधः। अर्थव. 1/32/1

यहाँ तक मैंने प्राण के सम्बन्ध में कहा कि जीवात्मा से परे वृक्षों में भी प्राण है। दूसरा मूर्त और अमूर्त सारे जड़ पदार्थों में भी प्राण विद्यमान हैं तभी वह सक्रिय रहते हैं। प्राण प्रदाता। प्रणव अर्थात् ईश्वर है वह भी प्राण स्वरूप है किन्तु इतना सूक्ष्म है कि उसे अभौतिक ही कहा जा सकता है वह सर्वत्र व्यापक है, वह इन प्राणों में भी व्यापक है तभी तो उनमें उस प्रेरक शक्ति का संचार होता रहता है। वहाँ परमेश्वर सर्वशक्तिमान है वह सारे दृश्य अदृश्य शक्तियों के प्रकाश में विद्यमान है। प्रकाश के तरंग इस भौतिक प्राण के आधार पर ही होता रहता है, वह प्रणव, प्राण जैसा विभिन्न प्रकार का नहीं है वह तो एक महान और अनन्त सर्वत्रपूर्ण है। आत्मा शक्ति का जो ज्योति दिखलाई देता है वह उसमें भी विद्यमान है जो साधक उस ज्योति में अपने योगबल से प्रवेश करते हैं वही जानते हैं कि वह कितना आनन्द स्वरूप है। और उसका सत्य कितना महान है।

वह क्या है - वह 'भूः' प्राणस्वरूप और पृथ्वीलोक का नियन्ता है। (भुवः) सर्वदुःख नाशक और अन्तरिक्ष लोक का नियन्ता है। (स्वः) आनन्दस्वरूप वह स्वर्ग (मुक्ति जगत) का नियन्ता है। (महः) वह महान और महत् लोकों का नियन्ता है। (जनः) वह सबका उत्पत्तिकर्ता, सबका प्रेरक और पोषक है। (तपः) वह तेज स्वरूप और प्रवर्तक है। (सत्यम्) वह सत्यस्वरूप और सर्वोपरि है।

अतः इन सप्त महाव्याहृतियों में उसका गुण, क्रिया और स्वभाव विद्यमान है। वेद का उपदेश है कि -

अप्सु ते जन्म दिवि ते संधस्थं समुद्रे अन्तर्महिमाते पृथव्याम्।
शुनो दिव्यस्म यन्म हस्तेन ते हविषा विधेमं।। (अथर्व. 6/3)

पदार्थ - (अप्सु) प्राणों में (हे परमेश्वर) (ते) तेरा (जन्म) प्रादुर्भाव है (दि वि) सूर्यमण्डल मे (त्ते) तेरा(सघस्थम्) सहवास है, (समुद्रे अन्तः) अन्तरिक्ष के भीतर और (पृथिव्याम्) पृथिवी में (ते) तेरी (महिमा) महिमा है। (शुनः) व्यापक (दिव्यस्यं) दिव्यस्वरूप परमेश्वर का (यत्महः) जो महत्त्व है (तेन) उसी (महत्त्व) से (ते) तेरे लिए (हे परमेश्वर!) (हविषा) भक्ति के साथ (विधेम) हम सेवा करें।।3।।

परमेश्वर की रचना का ज्ञान अनन्त है उसने प्राणियों को कैसे अस्तित्व में प्रकट किया उसके पहले उसे रचने की सामग्री जो उपादाने हैं उन्हें पहले रचा, जैसा कि वेद ने संक्षिप्त रूप से वर्णित किया है।

'वातो वा मनो वा गन्धर्वाः सप्तविंशति ......' (यजु. नवमोध्याय)

जो एक समष्टि वायु, प्राण, अपाण, व्यान, उदान, समान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनञ्जय (एकादश) बारहवाँ मन, तथा इसके साथ श्रोत आदि दश इन्द्रिय और पाँच सूक्ष्मभूत ये सब 27 पदार्थ ईश्वर ने इस जगत में पहले रचे हैं'

इस प्रकार प्रकृति से बने तत्वों, उनसे परे जीवात्मा और उनसे परे परमेश्वर है। तात्पर्य यह है कि उन्हीं सबके द्वारा उस परम माता-पिता परमात्मा को हम लोग जान रहे हैं। और उसके महिमा को देखकर हम सब उनकी प्राप्ति के लिए सन्ध्योपासना और यज्ञादि शुभ कर्म कर रहे हैं।

विभिन्न प्रकार की शक्ति, विभिन्न प्रकार की सृष्टि, विभिन्न प्रकार के प्रकाश और विभिन्न प्रकार के मौलिक सात रंग (बैंगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, कमला और लाल) जिनके संयोग वियोग से अन्य रंग प्रकृति में बनते हैं, और इन सबके अलावा इस शरीर के रचना करने में जो विभिन्न प्रकार के उपदानों ने कार्य कर - रस, रक्त, माँस, मेदा, अस्थि, मज्जा एवं शुक्र। इसके अतिरिक्त स्नायु, शरीर के जोड़, मस्तिष्क आदि को जिसने अस्तित्व में प्रकट किया है वह कौन हो सकता है? भूत के भीतरी ढांचा को वैज्ञानिकों ने कण तरंग कहा है, जो निरे जड़ पदार्थ हैं, उनमें स्वयं गति और परिवर्तन होने की शक्ति नहीं है, तो उन्हें कौन सक्रिय किया और करता है, उन सब शक्तियों को कहाँ से प्रेरणा मिलती है। तात्पर्य है कि इस शरीर की रचना और समुद्र के विचित्र जीव-जन्तुओं को बुद्धिपूर्वक किसने कैसे इनकी सांचा को बनाया। बनाने वाले का क्या प्रयोजन था और आदि में ये कैसे बन गए? क्या इन सबका उत्तर विज्ञान दे सकता है? अभी बहुत से ब्राह्माण्ड में अनजाने में सृष्टियों का निर्माण हुआ अथवा हो रहा होगा, उसका कर्म-कार्य कारण खोजने से पता चलता है कि एक प्रभाव एक प्रेरणा, एक विज्ञान से पूर्ण एक नियम है जो वह सर्वव्यापक सर्वत्र चुम्बक जैसा पूर्ण अदृश्य है, जिसे आत्म विश्वासी और योगी लोग ही ध्यान द्वारा देख सकते हैं और वह तभी देखा जा सकता है जब मन को परिवर्तन से रोक दिया जाता है। क्योंकि सभी भौतिक परिवर्तनशील हैं किन्तु जो अपरिवर्तनशील हैं उसकी प्राप्ति के लिए अपने मन और वृत्ति को रोकते रहने से अभ्यास द्वारा जिस समय साधक का मन एक स्थिर हो जाता है उस समय वह उसके आनन्द स्वरूप प्रकाश को देखने लगता है। किन्तु जिस प्रकार हिलते हुए तरंगजल में अपने स्वरूप को कोई नहीं देख सकता उसी प्रकार उसे भी बाहर की भौतिक सृष्टि अथवा सांसारिक माया में फंसा हुआ मन उसे नहीं देख सकता। उस अभौतिक ज्योति को देखने के लिए स्वयं को अन्दर की ज्ञान दृष्टि को स्थिर करना होगा और जब ध्यानियों का ध्यान उसकी महानता के प्रेम में मग्न हो जाता है तब उसका मन एकाग्र होने लगता है। किन्तु जब तक प्राण चलायमान रहेगा तब तक उसमें व्यापक उस महान ज्योति को कोई भी ध्यानी नहीं देख सकता। जब मन और प्राण स्थिर होने लगता है तभी उस आत्मशक्ति के अन्दर जो विद्यमान है उसका दर्शन होने लगता है किन्तु किञ्चित मन में परिवर्तन होने से वह नहीं दिखता। यह सब कार्य बहुत साधना और आहार विचार तथा मन की शुद्धि से सिद्ध होता है। गलत साधना से, तर्क से, ढांक ढोल बजाने से अथवा तीर्थ करने से वह प्राप्त नहीं होता (गीता में लिखा है)। इसके लिए किसी ज्ञानी वैदिक गुरु की आवश्यकता होती है जो ठीक-ठाक साधना का नियम बताकर करा सके।

गुरु क्या है? एक दर्पण के समान है उदाहरण के लिए मुख पर लगा दाग स्वयं नहीं दीखता। किन्तु गुरु के सामने जाने से वह त्रुटि दाग दोष दिखलाई देने लगता है और उसे छुड़ाने के लिए वह आचार्य उपाय बता देते हैं। इस प्रकार शुद्ध हो जाने पर आचार्य की कृपा और प्रतिभा से वह स्वयं को समझाने लगता है और उस शिष्य में एक परिवर्तन हो जाता है बुद्धि विचार शुद्ध होने लगता है।

अब शरीर के चक्र के बारे में थोड़ा जानकारी कर लेना ठीक है। चक्र क्या है? हारमोन्स अर्थात सूक्ष्म स्नायु और प्राणों का स्थान है। इनके जागृत हो जाने पर अज्ञानी भी ज्ञानी हो जाता है और भी अन्य सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं। 'वैदिक सम्पदा' में लिखा है कि - ''वेद ने इस शरीर में 8 चक्रों की स्थिति बताई है। इन चक्रों का सम्बन्ध सुषुम्णा नाड़ी से है। सुषुम्णा का अधोमुख भाग भौतिक प्राण-शक्ति के चक्रों में क्रमशः भेदन के लिए प्रवेश का द्वार है और मस्तिष्क में कपालों की मध्यसन्धि भाग में सुषुम्णा का दूसरा द्वार ब्रह्मरन्ध्र में है। ब्रह्मरन्ध्र में से इस दिव्य प्रकाशमय, ज्ञानमय प्राण का शरीर में प्रवेश होता है जो सविता से इस लोक पर अवतरित होता है। वहाँ सहस्रार चक्र है। योगी जन इसी मार्ग से ब्रह्मरन्ध्र से प्राणों का विसर्जन करके सूर्य मण्डल को भेदकर (यह आध्यात्मिक सूर्य है जो सूर्य दिखता है वैसा ही उसका प्रतिबिम्ब के समान होता है, जो जलाने वाला नहीं होता) परमधाम को प्राप्त करते हैं। इन दोनों द्वारों के ज्ञान से ही सुषुम्णा मार्ग में प्रवेश करने से अष्ट चक्रों का दर्शन एवं ज्ञान हो पाता है।''

दीर्घ जीवन प्राणों पर ही आश्रित है। स्वास्थ्य सम्पादन प्राणों पर ही आश्रित है। जीवन सुख प्राणों पर ही आधारित है। प्राण ही जीवन है। प्राण और मन दोनों ही मिलकर इस काया रूपी अपूर्व नगरी को स्वर्ग एवं नरक बना रहे हैं। इन्हीं से यह देह देव बन जाता है और इन्हीं से असुर और राक्षस भी बन जाता है।

- मु. पो.-मुरारई, जिला-वीरभूम (पं. बंगाल)

ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में आयोजित होने वाले शिविरों की तैयारी शुरू

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में

एक सौ आर्य युवा निर्माण शिविरों का होगा आयोजन

आर्य युवा निर्माण एवं ब्रह्मचर्य व्यायाम प्रशिक्षण शिविरों में भाग लेने के इच्छुक युवाओं से निवेदन है कि ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में आप शिविर में भाग लेने की तैयारी अभी से प्रारम्भ कर दें। इन शिविरों में युवाओं को प्रशिक्षण देने वाले व्यायाम शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए 22 से 28 मई, 2022 तक स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में व्यायाम शिक्षक शिविर का आयोजन होगा। इसमें योग्य व्यायामाचार्य व्यायाम शिक्षकों को प्रशिक्षित करेंगे। 29 मई, 2022 से जगह–जगह शिविरों का आयोजन प्रारम्भ होगा। जिसमें इन सभी व्यायाम शिक्षकों को प्रशिक्षण देने के लिए भेजा जायेगा। अपने शारीरिक एवं बौद्धिक विकास के लिए सभी युवक अभी से अपना पंजीकरण करवा लें, ताकि बाद में स्थान पूर्ण होने के पश्चात् आप शिविर से वंचित न रह जायें। शिविरों के सम्बन्ध में निम्नलिखित दूरभाष पर सम्पर्क करें।

निवेदक

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्

केन्द्रीय कार्यालय : 7, जन्तर, मन्तर रोड, नई दिल्ली–110001

सम्पर्क सूत्र – 9468165946, 9354840454, 9416630916

असाधारण व्यक्तित्व के धनी तथा आर्य समाज के उच्चकोटि के विद्वान

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी

- भवानी लाल भारतीय

लोकसेवा के महत्त्वपूर्ण कार्य करने के लिए लम्बी आयु प्राप्त करना आवश्यक नहीं है। यदि पुरुषार्थी व्यक्ति जीवन के आरम्भ में ही अपने कार्य और पुरुषार्थ की रूपरेखा निश्चित कर लें, तो थोड़े समय में ही वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो जाता है। यह तथ्य आर्य समाज के उच्चकोटि के विद्वान् वेदादि शास्त्रों के लिए पराकाष्ठा की लगन रखने वाले पं. गुरुदत्त विद्यार्थी के जीवन से सिद्ध होता है। पं. गुरुदत्त का जीवन 26 वर्ष की अल्पावधि का ही था, तथापि इस अत्यन्त संक्षिप्त काल में उन्होंने अध्ययन, लेखन, संगठन तथा धर्मप्रचार का जो कार्य कर दिखाया, वह शतायु भोगी लोगों के लिए भी ईर्ष्या उत्पन्न करने वाला है। पं. गुरुदत्त का जन्म 26 अप्रैल, 1864 को मुलतान के लाला रामकृष्ण के यहाँ हुआ। अध्ययन में इनकी रुचि बाल्यकाल से ही थी, अतः मुलतान से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर, उच्चतर अध्ययन के लिए वे लाहौर के गवर्नमेंट कॉलेज में प्रविष्ट हुए। यह जनवरी, 1881 की घटना है। आर्य समाज मुलतान के सभासद् तो वे 1880 में ही बन गए थे।

जब 1883 में स्वामी दयानन्द के रुग्ण होने के समाचार आर्य समाज लाहौर में आए, तो इस समाज के अधिकारियों ने लाला जीवनदास एवं पं. गुरुदत्त को स्वामी जी की सेवा सुश्रूषा के लिए अजमेर भेजने का निश्चय किया। 19 वर्ष के इस युवक को महाप्राण दयानन्द के जीवन का अन्तिम दृश्य हिलाकर रख गया। उन्होंने देखा कि किस प्रकार एक आस्तिक एवं लोकहित के लिए समर्पित महापुरुष, अपने जीवन का उद्देश्य प्राप्त करने के पश्चात् किस निर्भीकता के साथ अपनी आत्मा को सर्वात्म से मिलाने के लिए तत्पर है। दयानन्द के परिनिर्वाण के इस अभूतपूर्व दृश्य ने पं. गुरुदत्त के मन और मस्तिष्क पर बड़ा अनोखा प्रभाव डाला।

स्वामी दयानन्द के निधन के पश्चात् लाहौर के आर्यसमाजियों ने, अपने आचार्य की स्मृति को चिरजीवित रखने के लिए 'दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कॉलेज' के नाम से एक विद्यालय की स्थापना का निश्चय किया। इस शिक्षण संस्था के संस्थापकों में पं. गुरुदत्त विद्यार्थी का नाम भी महत्त्वपूर्ण है। डी. ए. वी. कॉलेज के लिए धन संग्रहार्थ जो प्रतिनिधि मण्डल देश के अनेक नगरों में गए, उनमें पं. गुरुदत्त की भूमिका सार्थक तथा सराहनीय रही। इस कार्य के लिए वे दिल्ली, अलीगढ़, बरेली, मुरादाबाद, लखनऊ, बनारस, इलाहाबाद, कानपुर, फर्रुखाबाद आदि अनेक नगरों में गए। वहाँ से पर्याप्त धन एकत्र किया। संयुक्त प्रान्त (अब उत्तर प्रदेश) के अतिरिक्त उन्होंने पंजाब के अनेक नगरों में भी भ्रमण किया। कॉलेज के लिए धन संग्रह करने के अतिरिक्त उन्होंने वैदिक विषयों पर प्रवचन भी किये। उनके प्रवचनों की सर्वत्र प्रशंसा होती थी।

पं. गुरुदत्त ने 'विज्ञान' विषय लेकर एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। उन दिनों उच्च शिक्षित भारतीयों के लिए सरकारी सेवा में प्रवेश पा लेना कोई कठिन कार्य नहीं था। किन्तु पं. गुरुदत्त की ऐसे किसी काम में रुचि नहीं थी जो उनके सार्वजनिक जीवन तथा आर्य समाज की सेवा में बाधक बने। एक बार तो उन्हें अतिरिक्त सहायक कमिश्नर के लिए होने वाली परीक्षा में बैठने की सलाह भी दी गई, किन्तु गुरुदत्त की रुचि प्रशासनिक कार्यों की अपेक्षा, अध्ययन अध्यापन में अधिक थी। 1887 में जब गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर के विज्ञान के प्रोफेसर ओमन अवकाश पर गए, तो पं. गुरुदत्त को अस्थाई रूप से उनके स्थान पर रख लिया गया। 1889 में वे डी. ए. वी. कॉलेज में अवैतनिक रूप में गणित तथा विज्ञान पढ़ाने लगे।

पं. गुरुदत्त द्वारा रचित साहित्य

पं. गुरुदत्त का संस्कृत एवं अंग्रेजी भाषा पर असाधारण अधिकार था। यद्यपि उन्हें किसी गुरु के चरणों में बैठकर संस्कृत का विधिवत् अध्ययन करने का अवसर नहीं मिला था, किन्तु मात्र स्वाध्याय के बल पर ही उन्होंने पाणिनीय व्याकरण पर असाधारण अधिकार प्राप्त कर लिया। वैलेण्टाइन लिखित 'संस्कृत व्याकरण के सरल पाठ' नामक प्रारम्भिक व्याकरण की पुस्तक उन्होंने मुलतान में हाई स्कूल में पढ़ते समय ही समाप्त कर डाली थी। पं. गुरुदत्त का पाणिनीय शास्त्र पर इतना अधिकार हो गया था कि व्याकरण पढ़ने के लिए आयु में उनसे अधिक बड़े स्वामी अच्युतानन्द, स्वामी स्वात्मानन्द, स्वामी महानन्द तथा स्वामी निजात्मानन्द नामक चार संन्यासियों ने तो उनसे विधिवत् 'अष्टाध्यायी' सीखी थी।

अब पं. गुरुदत्त ने 'दि रीजेनेरेटर ऑफ आर्यावर्त' नामक पत्र निकालना आरम्भ किया। इसमें उनके 'वेद और वेदार्थ', 'आर्य सभ्यता और दर्शन, ऋषि दयानन्द के सिद्धान्त आदि विषयों पर कुछ गम्भीर लेख छपे। 1888 में 'वैदिक संज्ञा विज्ञान' (The

पं. गुरुदत विद्यार्थी
१८६४-१८९०

Terminology of the Vedas) नामक उनका महत्त्वपूर्ण समीक्षामूलक लेख छपा, जिसे उन्होंने अपने आचार्य तथा इस (19वीं) शताब्दी के एकमात्र वैदिक विद्वान् स्वामी दयानन्द की स्मृति में समर्पित किया। इसी क्रम में दूसरा निबन्ध The Terminology of the Vedas and European Scholars (वैदिक संज्ञा विज्ञान तथा यूरोपीय विद्वान्) प्रकाशित हुआ। इसमें प्रो. मैक्समूलर तथा प्रो. मोनियर विलियम्स आदि द्वारा किये गये वेदार्थ की त्रुटियों की विवेचना है। उनके इन ग्रन्थों को वैदिक क्षेत्र में पर्याप्त ख्याति मिली। 'वैदिक संज्ञा विज्ञान' को तो ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में डिग्री कक्षा की पाठ्यपुस्तक के रूप में स्थान मिला।

पं. गुरुदत्त ने उपनिषदों की सुगम, किन्तु सारगर्भित व्याख्याएँ लिखीं। ईश, मुण्डक तथा माण्डूक्य इन तीन उपनिषदों पर पं. गुरुदत्त के व्याख्यात्मक ग्रन्थ अत्यन्त लोकप्रिय हुए। 'वैदिक टैक्स्ट्स' (Vedic Texts) शीर्षक से उन्होंने कतिपय वेद मंत्रों के वैज्ञानिक अर्थ भी किये। इनमें से प्रथम The Atmosphere शीर्षक है जिसमें ऋग्वेद (1/2/1) के मंत्र 'वायवा याहि दर्शतेमे' की व्याख्या है। द्वितीय The Composition of Water (जल की संरचना) शीर्षक है जिसमें ऋग्वेद के मंत्र (1/2/7) 'मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम्, धियं घृताचीं साधन्ता' की व्याख्या है। इस मंत्र में प्रयुक्त मित्र और वरुण की व्याख्या है। इस मंत्र में प्रयुक्त मित्र और वरुण को पं. गुरुदत्त ने ओषजन (Oxygen) तथा नत्रजन (Nytrogen) का वाचन माना है तथा दोनों के मिश्रण में जल की उत्पत्ति बताई है। Vedic Text का तीसरा भाग 'गृहस्थ' शीर्षक है जो ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के पचासवें सूक्त के प्रथम तीन मंत्रों का व्याख्यान है।

पाश्चात्य विद्वानों द्वारा वेद और वैदिक विषयों पर किये गये आक्षेपों का उत्तर देने में भी, पं. गुरुदत्त की लेखनी ने कभी प्रमाद नहीं किया। उन्होंने मोनियर विलियमस के ग्रन्थ 'भारतीय प्रज्ञा' (The Indian Wisdom) की आलोचना लिखी तथा पादरी टी. विलियम्स द्वारा नियोग प्रथा पर किये गये आक्षेपों का उत्तर दिया। इसी पादरी ने जब वेदों में मूर्तिपूजा के अस्तित्व को लेकर कुछ भ्रमात्मक बातें लिखीं, तो पं. गुरुदत्त ने उसका सटीक उत्तर दिया।

फ्रैडरिक पिन्कॉट नामक एक अंग्रेज लेखक के वेद विषयक विचारों की समीक्षा भी उन्होंने लिखी थी। कतिपय दार्शनिक विषयों पर उनके गम्भीर निबन्ध, इस तथ्य के परिचायक हैं कि गूढ़ तथा जटिल विषय की विवेचना करना उनके लिए कितना सहज था। 'The Realities of Inner Life' तथा 'Pecuniomania' आदि उनके निबन्ध इसी कोटि में आते हैं। पं. गुरुदत्त के अंग्रेजी भाषा पर सहज अधिकार और उनकी विषय विवेचना शक्ति को देखकर बड़े-बड़े विद्वान् भी मुग्ध रह जाते थे।

बौद्धिक क्षमता तथा कर्मठता में पं गुरुदत्त बेमिसाल थे, किन्तु उनका निजी जीवन सर्वथा अनियमित था। उन्होंने स्वास्थ्य की ओर कभी ध्यान नहीं दिया, यद्यपि अपने विद्यार्थी काल में वे नियमित व्यायाम करते रहे थे। शरीर को कष्ट देने में वे सुख अनुभव करते, और गर्मी तथा सर्दी में, ऋतु नियमों के प्रतिकूल आचरण करते। भोजन भी उनका अनियमित तथा नितान्त अल्प होता था। उनके सहपाठी तथा मित्र लाला लाजपतराय ने उनकी अनियमित जीवन शैली पर पर्याप्त विस्तार से लिखा है। निरन्तर भाषण, लेखन तथा सामाजिक कार्यों में व्यस्त रहने के कारण पं. गुरुदत्त का स्वास्थ्य खराब हो गया। वे राजयक्ष्मा के शिकार हो गए।

स्वास्थ्य सुधार के लिए वे पर्वतीय स्थल मरी (पाकिस्तान) भी गए, किन्तु स्वास्थ्य में अपेक्षित सुधार नहीं हुआ। अब उनके जीवन का संध्याकाल आ गया था। डॉ. नारायण दास और जालंधर के हकीम शेर अली की चिकित्सा ने कुछ दिनों तक उनके जीवनदीप को स्थिर रक्खा, किन्तु पं. गुरुदत्त के शरीर की दुर्बलता जिस सीमा तक पहुँच चुकी थी, उससे उबरना कठिन था। अन्ततः 19 मार्च, 1890 को इस युवा मुनि का देहान्त हो गया।

लाला लाजपतराय ने अपने इस मित्र तथा सहयोगी को श्रद्धांजलि देते हुए उन्हें असाधारण व्यक्तित्व का धनी, सच्चा, गम्भीर, संस्कृत का पारगामी विद्वान् तथा ऋषियों की परम्परा का उत्तराधिकारी बताया। पं. गुरुदत्त ने ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' का अठारह बार अध्ययन किया। इसके प्रत्येक पारायण ने उन्हें नवीन जानकारियाँ प्रदान की थी। 'आर्य पत्रिका' (लाहौर), 'ट्रिब्यून' (लाहौर), 'दि ट्रू लाइट' (एक ईसाई पत्र), 'सिविल एण्ड मिलिटरी गजट' (लाहौर) जैसे पत्रों ने इस युवा मनीषी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। सर सैयद अहमद खाँ द्वारा स्थापित ऐंग्लो मुहम्मडन कॉलेज (वर्तमान में अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी) के मुखपत्र 'अलीगढ़ इन्स्टीट्यूट गजट' ने भी अपने 25 मार्च, 1890 के अंक में, पं. गुरुदत्त के निधन पर अपार दुःख व्यक्त किया।

- 8/423, नन्दनवन, चौपासनी मण्डल, जोधपुर (राज.)

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का राजस्थान दौरा

चित्तौड़गढ़, पाली तथा जोधपुर में विविध कार्यक्रमों में हुए सम्मिलित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट, बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्ष बहन पूनम आर्या तथा संयोजक बहन प्रवेश आर्या जी 15 अप्रैल, 2022 को पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़ पहुँचे। यहाँ आर्य जगत के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री के कनिष्ठ सुपुत्र प्रिय अनिरूद्ध के विवाह उपरान्त आशीर्वाद समारोह का आयोजन किया गया था। विदित हो कि प्रिय अनिरूद्ध का विवाह अमेरिका निवासी सौ. लतिका के साथ 9 अप्रैल, 2022 को मुम्बई में पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। इस नव–दम्पत्ति को आशीर्वाद देने हेतु 16 अप्रैल, 2022 को कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़ के प्रांगण में यज्ञ एवं समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा उनके सभी सहयोगी विशेष रूप से सम्मिलित हुए। उनके अतिरिक्त कन्या पक्ष की ओर से परिणय सूत्र में बंधी सुश्री लतिका की संरक्षिका बहन लक्ष्मी आर्या तथा उसके परिवारजन भी इस अवसर पर उपस्थित हुए। आचार्य सोमदेव जी के पैतृक ग्राम नैनोरा से भी सैकड़ों स्त्री–पुरुष आशीर्वाद प्रदान करने हेतु पधारे, उनके अतिरिक्त निम्बाहेड़ा, बड़ी सादड़ी, बीकानेर, उदयपुर, जयपुर, नागदा (मध्य प्रदेश), आदि स्थानों से भी गणमान्य महानुभाव और सम्बन्धीगण पधारे। आचार्य जीववर्द्धन शास्त्री तथा डॉ. संदीपन ने यज्ञ का पौरोहित्य किया और सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का प्रेरणादायक व्याख्यान हुआ। स्वामी जी ने नव–दम्पत्ति के जीवन की मंगल कामना के साथ उनके उत्तम गृहस्थ, सुख–समृद्धि, यश–कीर्ति एवं सुसन्तान प्राप्ति की प्रभु से प्रार्थना की और आचार्य सोमदेव जी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुदक्षिणा शास्त्री जी तथा सभी परिवारजनों को बधाई दी। कार्यक्रम में मुख्यरूप से कन्या गुरुकुल ट्रस्ट के प्रधान श्री देवेन्द्र शेखावत, श्री मनुदेव, श्री कुंजीलाल आर्य, श्री मांगीलाल आर्य, श्री दशरथ आर्य, श्री विक्रम अंजना (निम्बाहेड़ा), श्री वीरेन्द्र शर्मा (बड़ी सादड़ी), श्री परमानन्द शर्मा (नागदा, मध्य प्रदेश), श्री सुधीर यादव तथा आचार्य सोमदेव जी के ज्येष्ठ सुपुत्र श्री प्रणव शास्त्री एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती निकिता शास्त्री आदि ने व्यवस्था में अपना योगदान दिया।

इस अवसर पर सभी विद्वानों का आचार्य सोमदेव शास्त्री जी ने सम्मान किया और कन्या गुरुकुल को भी दान राशि भेंट की। बहन लक्ष्मी आर्या ने भी कन्या पक्ष की ओर से 11 हजार रुपये की राशि कन्या गुरुकुल को दी तथा विद्वानों को भी सम्मानित किया। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

17 अप्रैल, 2022 को पाली में

17 अप्रैल, 2022 को सायं 5 बजे पाली में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा उनके सभी सहयोगियों का आर्य वीरदल, आर्य वीरांगना दल तथा आर्य समाज द्वारा भव्य स्वागत किया गया। आर्य वीरदल व्यायामशाला में इस उपलक्ष्य में एक शान्दार कार्यक्रम का आयोजन भी हुआ जिसमें आगन्तुक अतिथियों का विशेष सम्मान किया गया।

इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा

कि देश को आजाद कराने में आर्य समाज के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने उपस्थित आर्य वीर वीरांगनाओं को क्रान्तिकारियों की लम्बी सूची से अवगत कराया जिन्होंने ऋषिवर दयानन्द और आर्य समाज से प्रेरणा ग्रहण कर राष्ट्र की बलिवेदी पर स्वतन्त्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। उन्होंने कहा कि देश की आज़ादी में 85 प्रतिशत क्रान्तिकारी आर्य समाज से प्रभावित थे। आर्य समाज का इतिहास गौरवमय रहा है। स्वामी दयानन्द जी ने राष्ट्र एवं समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने के लिए आर्य समाज की स्थापना की और इसी आर्य समाज की भट्टी में तपकर अनेक क्रांतिकारियों ने देश को आजाद कराया।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्षा बहन पूनम आर्या एवं राष्ट्रीय संयोजिका बहन प्रवेश आर्या ने कहा कि ऋषि दयानन्द जी नारी शिक्षा के प्रबल समर्थक थे, उनकी प्रेरणा से आर्य समाज ने देश में जगह–जगह लड़कियों के लिए कन्या गुरुकुल स्थापित कर कन्याओं को अबला से वीरांगना बनाने का सार्थक प्रयास किया, उन्होंने कहा कि संस्कारित और प्रगतिशील मनुष्य ही आर्य अर्थात श्रेष्ठ है। बेटियों को पढ़ाकर संस्कारित करना चाहिए क्योंकि संस्कारित नारी ही श्रेष्ठ मनुष्य का निर्माण करती है।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट ने आगन्तुक अतिथियों का परिचय दिया एवं राजस्थान में आर्य वीर दल की स्थापना में गुरूजी मदन सिंह जी (भाई साहब) के योगदान एवं पुरुषार्थ पर प्रकाश डालकर युवाओं से उनके जीवन से प्रेरणा ग्रहण करने का आहवान किया। उन्होंने कहा कि देश में ढोंग, पाखण्ड एवं अन्धविश्वास बहुत बढ़ रहा है आर्य वीरों को सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर आर्य समाज के कार्यों में सहयोग करने का प्रयास करना चाहिए।

इससे पूर्व अतिथियों का आर्य वीर दल लाखोटिया रोड पधारने पर श्री भरत आर्य के नेतृत्व में आर्य वीरांगना दल की ओर से परम्परागत वीरोचित अगवानी की गई। इसके पश्चात् श्री ऋतमानन्द गुरुकुल विज्ञान आश्रम न्यास, आर्य वीर दल और आर्य वीरांगना दल की ओर से स्वागत पट्टिका और माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। मंच संचालन श्री देवेन्द्र मेवाडा ने किया। आर्य वीर दल के संरक्षक श्री धनराज आर्य ने सभी का आभार व्यक्त किया।

आगन्तुक अतिथियों में सार्वदेशिक अगले पृष्ठ पर जारी

पृष्ठ 4 का शेष

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का राजस्थान दौरा

चित्तौड़गढ़, पाली तथा जोधपुर में विविध कार्यक्रमों में हुए सम्मिलित

आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट, गुरुकुल धीरणवास, हिसार (हरियाणा) के प्रधान स्वामी आदित्यवेश जी, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्षा बहन पूनम आर्या, राष्ट्रीय संयोजिका बहन प्रवेश आर्या, आर्य वीर दल राजस्थान के अधिष्ठाता श्री भंवरलाल आर्य, अध्यक्ष श्री चांदमल आर्य, महामंत्री श्री जितेंद्र सिंह आर्य, आर्य समाज फोर्ट जोधपुर के प्रधान श्री गणपत सिंह मुख्यरूप से उपस्थित रहे।

आगन्तुक अतिथियों का जिन लोगों ने स्वागत किया उनमें ऋतमानन्द गुरुकुल विज्ञान आश्रम न्यास की ओर से कार्यवाहक अध्यक्ष श्री धनराज आर्य, मंत्री श्री घेवरचन्द आर्य, कोषाध्यक्ष श्री शिवराम आर्य, कानूनी सलाहकार एडवोकेट श्री कुन्दन चौहान, आर्य वीर दल पाली की ओर से वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री शंकर हंस, उपाध्यक्ष श्री देवेंद्र मेवाड़ा, सचिव श्री हनुमान आर्य, श्री योगेन्द्र देवड़ा, कोषाध्यक्ष श्री महेद्र प्रजापत, श्री भंवर गौरी, श्री वासुदेव शर्मा, श्री विष्णु बंजारा, श्री वीरम गुर्जर, श्री राहुल तेजी, आर्य वीरांगना दल की ओर से सुश्री सुमन कंवर, आरती देवी, लक्षिता आर्या, भगवती आर्या, तमन्ना आर्या, निधि आर्या, पूर्वा आर्या एवं नीतू आर्या आदि के द्वारा आगन्तुक विद्वानों एवं विदुषियों का स्वागत पट्टिका व माल्यार्पण कर जोरदार स्वागत किया गया।

कार्यक्रम में जिन महानुभावों का सहयोग रहा उनमें सर्वश्री छवि आर्या, पारस मेवाडा, गजेंद्र गुर्जर, पुखराज शर्मा, गिरधारी लाल, ऋषभ आर्य, राकेश सोनी, मोहन देवड़ा, मुकेश देवड़ा, रामचंद्र भट्ट, विनोद तोमर, हेमराज

आर्य, अशोक चांवरियां, संतोष कवर, कमला चौधरी, नीलमदेवी, प्रियंका चौधरी, सजना मेडतियां, नेहा सेन, तनु आर्या एवं समस्त आर्य वीर दल कार्यकारिणी का सहयोग रहा।

कार्यक्रम के उपरान्त आर्य वीरदल पाली के भामाशाह श्री धनराज आर्य जिनको सभी लोग सम्मान से धनजी भाई कहते हैं। उनके निवास पर सभी का भोजन रहा। पाली के कार्यक्रम में आर्य वीरदल के संचालक श्री भंवरलाल आर्य, आर्य वीरदल के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री चांदमल आर्य, श्री गणपत सिंह आर्य, श्री वीरेन्द्र मेहता एवं श्री नारायण सिंह आर्य आदि भी सभा प्रधान जी के काफिले में सम्मिलित हो गये थे। श्री धनजी भाई के निवास पर भोजन के उपरान्त उनके पौत्र को जन्मदिन के उपलक्ष्य में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने आशीर्वाद दिया और कुछ देर के लिए उपदेश भी हुआ। श्री धनजी भाई ने भी सभी विद्वानों का घर आने पर विशेष आतिथ्य एवं सत्कार किया। पाली से चलकर रात्रि निवास जोधपुर में हुआ।

18 अप्रैल, 2022 को प्रातः 9 बजे जालौर में

18 अप्रैल, 2022 को प्रातः 9 बजे जालौर के प्रतिष्ठित आर्यनेता श्री दलपत सिंह आर्य की सुपुत्री सौ. स्वर्णाक्षी के विवाह के उपलक्ष्य में हल्दी रश्म के अवसर पर उनके पारिवारिक कार्यक्रम में सम्मिलित होकर उनके कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इसके पश्चात् आर्य वीरदल जोधपुर के

समर्पित कार्यकर्ता श्री शिव प्रकाश सोनी के घर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, श्री बिरजानन्द जी, बहन पूनम एवं प्रवेश आर्या जी के स्वागत एवं सम्मान का कार्यक्रम रखा गया जिसमें जोधपुर के सभी कार्यकर्ता सम्मिलित हुए। श्री शिव प्रकाश सोनी जी के परिवार ने बड़ी आत्मीयता एवं सम्मान के साथ आगन्तुक अतिथियों को सम्मानित किया तथा जलपान कराया। स्वामी आर्यवेश जी का संक्षिप्त उपदेश भी इस अवसर पर कराया गया।

अगला कार्यक्रम आर्य वीरदल के वरिष्ठ नेता श्री नारायण सिंह आर्य के निवास पर स्वामी जी और उनके सहयोगियों का स्वागत तथा आतिथ्य एवं जलपान की व्यवस्था थी। वहां भी लगभग डेढ़ घण्टे तक सभी कार्यकर्ता उपस्थित रहे और विविध विषयों पर चर्चा होती रही।

सायंकाल 4 से 5 बजे तक स्व. माता मोहिनी देवी धर्मपत्नी स्व. चौ. मनीराम भाटी जी की स्मृति में आयोजित शोक सभा में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का आध्यात्मिक प्रवचन हुआ। इस सभा में उपस्थित सैकड़ों लोगों ने दत्तचित्त होकर व्याख्यान सुना। स्वामी जी ने दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए जीवात्मा की गति, कर्मफल आदि के सम्बन्ध में सदोपदेश देकर शोक संतप्त पारिवारिकजनों का ढांढस बंधाया और दिवंगत माता जी के जीवन से प्रेरणा लेने का संकल्प दिलाया। विदित हो कि दिवंगता माता जी के इस परिवार से आर्य वीरदल जोधपुर के अध्यक्ष श्री हरि सिंह आर्य जी का रिश्तेदारी का सम्बन्ध है। उन्हीं के प्रयास से सभा प्रधान जी इस शोक सभा में सम्मिलित हुए।

19 अप्रैल, 2022 को प्रातः 11 बजे पार्क प्लॉजा होटल में पत्रकार सम्मेलन

19 अप्रैल, 2022 को प्रातः 11 बजे पार्क प्लॉजा होटल में पत्रकार सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें जोधपुर के प्रिंट तथा इलेक्ट्रानिक मीडिया के सभी प्रमुख संवाददाता उपस्थित थे। इस पत्रकार सम्मेलन का आयोजन जोधपुर शहर की यशस्वी विधायक बहन मनीषा पंवार के सौजन्य से किया गया और वे स्वयं भी सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के साथ पत्रकार सम्मेलन में सम्मिलित रहीं। स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज के भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा पत्रकारों के समक्ष प्रस्तुत की और उनके प्रश्नों के उत्तर भी अपने संतुलित वक्तव्यों के द्वारा दिये।

सायं 3 बजे से आर्य समाज मंडौर में आर्य वीरदल कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित किया गया था जिसमें जोधपुर की सभी आर्य वीरदल शाखाओं के और आर्य समाजों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। इस सम्मेलन में पाली,

जालौर, बालोत्रा तथा जोधपुर के विभिन्न क्षेत्रों से आर्य वीर उत्साह के साथ सम्मिलित हुए। इस सम्मेलन को सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त स्वामी आदित्यवेश जी, श्री बिरजानन्द जी, बहन प्रवेश आर्या तथा बहन पूनम आर्या, श्री राजेन्द्र गहलोत (बालोत्रा) आदि ने सम्बोधित किया। सम्मेलन का मंच संचालन आर्य वीरदल जोधपुर के अध्यक्ष और आर्य समाज के समर्पित कार्यकर्ता श्री हरि सिंह आर्य ने संभाला। सम्मेलन में आर्य वीरदल राजस्थान के अध्यक्ष श्री चांदमल आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के उपप्रधान श्री नारायण सिंह आर्य, श्री शिव प्रकाश सोनी, श्री सौभाग सिंह आर्य, आर्य वीरदल जोधपुर के संचालक श्री

उम्मेद सिंह आर्य, श्री लक्ष्मण सिंह आर्य आदि भी उपस्थित थे। कार्यक्रम के उपरान्त प्रीति भोज की भी सुन्दर व्यवस्था की गई थी।

आर्य वीरदल सम्मेलन के उपरान्त सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा अन्य सभी नेतागण आर्य वीरदल राजस्थान के संचालक श्री भंवरलाल आर्य के चचेरे भाई श्री रोशन लाल के असामयिक निधन हो जाने पर शोक संतप्त परिवार को सांत्वना देने के लिए पाबूपुरा कालोनी, जोधपुर में पहुँचे और परिवारजनों के साथ बैठकर उन्हें सांत्वना दी। दिवंगत श्री रोशन लाल 45 वर्ष के थे और उनका लम्बी बीमारी के बाद निधन हो गया था। श्री भंवर लाल आर्य जी के सगे चाचा के पुत्र थे। अतः स्वामी आर्यवेश जी ने तथा अन्य नेताओं ने दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि देकर परिवारजनों का ढांढस बंधाया।

19 अप्रैल, 2022 की रात्रि 9 बजे से 11 बजे तक श्री दलपत सिंह आर्य जी की बेटी स्वर्णाक्षी के विवाह उत्सव में सम्मिलित होकर वर तथा कन्या को आशीर्वाद और पारिवारिकजनों को शुभकामना तथा बधाई दी। 20 अप्रैल, 2022 को प्रातः प्रस्थान करके वापस लौट आये।

गर्मी के मौसम में स्वास्थ्य सुरक्षा

- डॉ. सपना जैन

गर्मी के मौसम में तेज धूप में घूमने पर हीट क्रम्प्स हीट प्रोस्ट्रेशन और लू लग जाना एक सामान्य घटना है। उन देशों में जहाँ अधिक गर्मी पड़ती है वहाँ तो लू लग जाना एक आम बात है। लू लगने को सन स्ट्रोक, हीट स्ट्रोक इत्यादि नामों से जाना जाता है। गर्मी के मौसम में जरा सी असावधानी से मनुष्य इन घातक बीमारियों के चपेट में आ जाता है।

हीट क्रम्प्स : गर्मी के मौसम में जलवायु मण्डल का तापमान शरीर से अधिक हो जाता है। तब शरीर बाहरी वातावरण के अनुकूल बने रहने के लिए अर्थात शरीर का तापमान न बढ़े इसके लिए स्वाभाविक क्रिया करता है अर्थात् शरीर में पसीना आना शुरू होता है। इस क्रिया में त्वचा में रक्त वाहिनीयाँ फैल जाती हैं जिससे रक्त का प्रवाह अधिक होने लगता है। स्वेद ग्रंथियाँ सक्रिय हो जाती हैं तथा शरीर से पसीना आना शुरू हो जाता है। यह पसीना बाहर आकर वायु के सम्पर्क में आने से भाप बनकर उड़ जाता है। इस क्रिया में पानी और गुप्त ऊष्मा का व्यय होता है। जिससे शरीर ठंडा हो जाता है। धूप में अधिक देर तक रहने से अधिक पसीना आता है और पसीने के साथ नमक की कमी होने से माँस पेशियों में अकड़न होने लगती है। यह अकड़न पैर की पिंडलियों और पेट में अधिक होती है। इसे हीट क्रम्प्स कहते हैं।

हीट प्रोस्ट्रेशन : जब माँस पेशियों में अकड़न दर्द एवं तेज पसीना आने के साथ ही चक्कर एवं कमजोरी आने लगती है। चेहरा निस्तेज होने लगता है एवं बेहोशी आने लगती है। नाड़ी की गति और स्वास्थ्य गति भी कम होने लगती है परन्तु शरीर का तापमान सामान्य बना रहता है। बाहर की गर्मी से शरीर के तापक्रम का संन्तुलन बनाये रखने के लिए रक्त का प्रवाह त्वचा की ओर अधिक होने लगता है इससे हृदय को जम्प करने के लिए कम रक्त मिलता है। इस स्थिति में मस्तिष्क को पर्याप्त रक्त न मिलने से कमजोरी व चक्कर आने लगता है इसे हीट प्रोस्ट्रेशन कहते हैं।

हीट क्रम्प्स एवं हीट प्रोस्ट्रेशन का उपचार : जब माँस पेशियों में अकड़न एवं दर्द होने लगे तो चुटकी भर नमक पानी में घोलकर पी लेना चाहिए। इससे अकड़न में तुरन्त राहत मिलती है। यदि ऐसा नहीं किया गया तो व्यक्ति हीट प्रोस्ट्रेशन की स्थिति में आ जाता है जो व्यक्ति इस स्थिति में आ गया हो उसे छाव में लिटा कर ठण्डे पानी से भीगे कपड़े से शरीर पोछना चाहिए एवं शरीर पर पंखे से तेज हवा करना चाहिए। इससे हृदय की ओर रक्त प्रवाह बढ़ता है। यदि व्यक्ति होश में आ गया हो तो उसे नमक का घोल या इलेक्ट्राल का घोल पीने को दें। यदि रोगी होश में न हो तो रोगी को नमक के घोल का अनीमा दें। यह दोनों स्थितियाँ लू लगने के पूर्व की हैं।

लू (हीट स्ट्रोक) : गर्मी जब अपनी चरम सीमा पर होती है तो हवा उतनी गर्म एवं शुष्क रहती है कि सुरक्षित स्थान पर रहने पर भी झुलसा देने वाली गर्मी महसूस होती है। हमारे देश में मुख्यतः उत्तर, पूर्वोत्तर और मध्य भारत में भयानक गर्मी पड़ती है। मई, जून, से यह गर्मी अपना विकराल रूप धारण कर लेती है।

लू क्यों और कैसे लगती है : हमारे शरीर में बहुत ही उच्च स्तर का तापमान कंट्रोल सिस्टम है। यही कारण है कि वातावरण का तापमान चाहे कैसा भी कम ज्यादा रहे मानव शरीर का तापमान लगभग एक सा बना रहता है। मानव शरीर के इस तापमान कंट्रोल सिस्टम में तापमान के उतार-चढ़ाव को सहने की पर्याप्त क्षमता है परन्तु इसकी भी एक सीमा रहती है। जब लू की गर्मी बहुत अधिक हो जाती है इसे हमारा शरीर सह नहीं सकता तब 'लू' लग जाती है। जब हमारा शरीर उच्च तापमान को कंट्रोल करता है जब हमारे शरीर से पसीना निकलता है पसीने के साथ लवण की कुछ मात्रा भी शरीर से निकलती है। पसीने से शरीर को ठण्डक प्राप्त होती है। परन्तु बार-बार अधिक पसीना निकलने से शरीर में पानी एवं लवण की कमी हो जाती है, जिसमें शरीर में रक्त संचार में बाधा उत्पन्न होती है और शरीर के तापक्रम में वृद्धि हो जाती है, तत्पश्चात 'लू' लग जाती है। साधारण रूप से लू किसी को भी अपनी चपेट में ले सकती है परन्तु शराबियों, डायबिटीज के रोगी, चर्म रोगी, स्थूल, वृद्ध, दुर्बल रोगियों को लू लगने का खतरा रहता है।

लू से बचने के उपाय :

- गर्मी के दिनों में मुहल्ले या गली में घूमते समय नंगे बदन न रहे, वस्त्र पहने रहें ताकि पसीना आपके शरीर को ठण्डा किए रहे।
- गर्मियों में नाक, कान, मुँह, गर्दन को धूप से बचाए। धूप में चलते समय छतरी का प्रयोग करें।
- खाली पेट (भूखे, प्यासे) घर से बाहर न निकलें। आँखों की सुरक्षा हेतु धूप का चश्मा लगाएँ।
- गमियों में सिंथेटिक कपड़ों का प्रयोग यथासम्भव न करें। जहाँ तक हो सके सूती कपड़े या खादी के कपड़ों का प्रयोग करें क्योंकि ये कपड़े उष्णता के अवरोधक होते हैं। काले या अन्य गहरे रंगों के कपड़े भी कम ही पहने क्योंकि यह रंग ऊष्मा को अवशोषित करते हैं। साधारणतः सफेद या हल्के रंग के ही कपड़े पहनें।
- भोजन में कच्चे प्याज का सेवन अवश्य करें क्योंकि प्याज में लू से बचाव करने का चमत्कारिक गुण है।

  गर्मियों में दही एवं छाछ का सेवन पर्याप्त मात्रा में करें।
- गर्मियों में तरल लेकिन ठण्डे पदार्थों का सेवन अधिक करना चाहिए।
- यह सावधानियाँ बरतकर केवल आप 'लू' से ही नहीं अपितु गर्मियों में होने वाली अन्य बीमारियों से भी बच सकते हैं।

लू लगने के लक्षण :

- लू लगने की शिकायत अचानक होती है, विशेष लक्षण के रूप में रोगी को पसीना नहीं आता या पसीना निकलना बन्द हो जाता है। इसी कारण शरीर का तापमान एकाएक बहुत ज्यादा बढ़ जाता है। यह तापमान 105 डिग्री फारनाहाइट या इससे भी अधिक हो सकता है। तेज बुखार के साथ, सिर दर्द होता है।
- नाड़ी श्वसन गति तीव्र हो जाती है।
- शरीर में जलन की अनुभूति होती है परन्तु विशेष रूप से त्वचा, नेत्रगोलक एवं कान के भीतरी भाग में जलन तीव्र होती है।
- चेहरे का रंग लालिमा युक्त हो जाता है। नेत्र की पुतलियाँ फैलने लगती हैं।
- त्वचा गर्म एवं शुष्क हो जाती है।
- चक्कर, सिरदर्द, दस्त एवं मितली (उल्टी) इत्यादि की शिकायत होने लगती है।
- रोगी शरीर में खिचाव तथा हाथ पैर में ऐंठन अनुभव करने लगता है। शरीर में पानी की कमी और अत्यधिक ताप के कारण रक्तप्रवाह धीमा पड़ जाता है, जिससे नसों में खिचाव होने लगता है, कभी-कभी रक्त प्रवाह रूक जाता है जिससे नसे फट जाती है इस अवस्था में रोगी को बचा पाना सम्भव नहीं हो पाता।
- रोगी को बार-बार रुक-रुक कर मूत्र त्याग की शिकायत होती है। पेशाब में जलन होती है।
- लू के लक्षण दिखाई देते ही तुरन्त योग्य चिकित्सक से सलाह लें।

लू लगने का उपचार :

- लू लगने पर यदि तुरन्त उपचार न किया जाए और लापरवाही की जाए तो रोगी की मृत्यु भी हो सकती है। इसलिए लू लगने पर चिकित्सा के उपाय तुरन्त करना चाहिए।
- यदि किसी को लू के लक्षण प्रकट हों तो तुरन्त उसे शीतल स्थान में लिटा दें शरीर के कपड़े कम कर दें, माथे पर ठण्डे पानी की पट्टी रखें। शरीर पर गीली चादर या टावल लपेटकर पंखा या कूलर चला दें।
- लू लगे रोगी को ठण्डे पानी के टब में इस तरह से लिटा दें कि उसका सिर न डूबे। सिर पर लगातार ठण्डा पानी डालते रहे। थोड़े-थोड़े समय पर रोगी के शरीर का तापमान लेते रहें। यदि 100 डिग्री से नीचे आ जाए तो रोगी को टब से निकाल लें। यदि पुनः तापमान बढ़े तो फिर से ठण्डे पानी के टब में लिटा दें। यदि आवश्यक हो तो सलाईन शुरू करवा दें। पैर व हाथ की मालिश नीचे से ऊपर की दिशा में करें जिससे रक्त प्रवाह हृदय की ओर अधिक हो।
- ज्वर के साथ ही रोगी का ब्लड सर्कुलेशन पर भी कंट्रोल रखना भी आवश्यक है इसके लिए रोगी के शरीर पर बकरी के दूध की मालिश करें क्योंकि बकरी के दूध की तासीर ठण्डी होती है। हाथ के तलवों पर प्याज के रस की मालिश करें प्याज के रस में गर्मी को नष्ट करने का चमत्कारिक गुण होता है। प्याज का रस मुख द्वारा भी सेवन करा सकते हैं।
- दिन में दो तीन बार एक एक ग्लास कच्चे आम का पना-पिलाने से रोगी शीघ्र स्वास्थ्य लाभ करता है। यह लू से बचाव की अचूक एवं सर्वश्रेष्ठ औषधि है।
- जौ भी 'लू' के बचाव में काफी हद तक सहायक है। जौ का आटा और पिसी हुई प्याज मिलाकर शरीर पर लेप करने से शीघ्र आराम मिलता है।
- नीबू के रस में मिश्री मिलाकर पीने से भी रोगी को लाभ मिलता है।
- पानी में शुद्ध शहद और ग्लूकोज मिलाकर रोगी को बार-बार सेवन करायें।
- लू लगने पर आहार में हल्का भोजन एवं मौसमी, संतरा, नींबू के रस का सेवन अत्यधिक लाभप्रद है। तरबूज, खरबूज, आंवला भी रोगी के लिए हितकर है।
- रोगी को चाय, काफी जैसे उत्तेजक पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए।
- एक बार लू लगने पर रोगी को बार-बार लू लगने की सम्भावना रहती है। इसलिए ऐसे व्यक्ति को धूप, गर्म हवा एवं गर्मी के मौसम में कड़ी मेहनत से अपने आपको यथासम्भव बचाना चाहिए।

आर्यसमाज महाराजपुर द्वारा मई माह में लगाया जायेगा निःशुल्क शिविर

आर्य समाज महाराजपुर 2 मई से 8 मई, 2022 तक निःशुल्क आर्य वीर दल का शिविर लगाने जा रहा है। उक्त शिविर में 12 से 25 वर्ष तक के युवाओं को आत्मरक्षा के गुण जैसे जूडो कराटे, तलवार, भाला लाठी एवं विभिन्न प्रकार के शारीरिक व्यायाम दूर–दराज से बुलाए गए प्रशिक्षकों द्वारा सिखाए जाएंगे। आर्य वीर दल का यह शिविर बिल्कुल निःशुल्क है जिसमें 12 से 25 वर्ष तक के युवा भाग ले सकते हैं।

दिनांक 2 मई से 8 मई तक चलने वाले इस सात दिवसीय शिविर में आवास, स्वल्पाहार, सुबह एवं शाम का खाना तथा प्रशिक्षण सब कुछ निःशुल्क रहेगा। शिविर में भाग लेने वाले शिविरार्थियों को कम से कम छठवीं कक्षा पास होना अनिवार्य है तथा शिविर में प्रशिक्षकों द्वारा निर्धारित नियमों का पूर्ण अनुशासन में रहकर पालन करना होगा। शिरार्थियों को सातों दिन शिविर में ही रहना पड़ेगा, जहाँ उन्हें शिविर की दिनचर्या के अनुसार चलना होगा इसके अलावा उनका शारीरिक विकास के साथ–साथ अध्यात्मिक विकास भी होगा। शिविर में जो शिविरार्थी उद्दंडता अथवा अनुशासन भंग करने का प्रयास करेगा उसे तत्काल शिविर से बाहर निकाल दिया जाएगा।

शिविरार्थियों की संख्या सीमित है इसलिए पहले आओ पहले पाओ के आधार पर शिविर में बच्चों के रजिस्ट्रेशन किए जा रहे हैं। ज्ञात हो कि आर्य समाज महाराजपुर मानव कल्याण हेतु विभिन्न प्रकार के शिविर जैसे वैदिक ज्ञान विज्ञान शिविर, नेत्र शिविर, महिला उत्थान शिविर आदि का आयोजन समय–समय पर करता रहता है। किंतु बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु यह पहला निःशुल्क शिविर होगा जिसमें प्रातः 4:00 बजे से रात्रि 10:00 बजे तक बच्चों को एक संयमित दिनचर्या के तहत संस्कारित गुणों के साथ–साथ शरीर के सर्वांगीण विकास हेतु सीखने का अनुभव प्राप्त होगा।

आर्य समाज महाराजपुर इस शिविर को लगाने में बहुत अधिक धनराशि व्यय करेगा। राष्ट्र निर्माण में युवाओं को प्रशिक्षित करने के पुनीत कार्य में जो दान दाता दान देने के इच्छुक हों वे आर्य समाज महाराजपुर में दान राशि जमा करके रसीद प्राप्त कर सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए निम्न मोबाइल नम्बरों 9589582626, 9826285402, 8982561737, 9755585458 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

सामाजिक वातावरण को प्रदूषित करती अश्लीलता

- डॉ. हर्षवर्धन शर्मा

अब समय आ गया है कि समाज को अपनी पूर्ण शक्ति अश्लीलता के वातावरण को दूर करने में लगानी चाहिए। आज समाज को जितनी हानि अश्लीलता के वातावरण से हो रही है, उतनी अन्य किसी से नहीं। समाज का पथ प्रदर्शन करने वालों का पुनीत एवं परम कर्तव्य है कि बढ़ती अश्लीलता पर साहसपूर्वक अंकुश लगाने में अपना योगदान दें।

जिस देश के चरित्र से शिक्षा ली जाती थी, जहाँ पर लज्जा को ही आभूषण माना गया था, उस विश्व का मार्गदर्शन करने वाले मनीषियों के देश में आज निर्लज्जता अश्लीलता की पराकाष्ठा है, क्योंकि पाश्चात्यता की चकाचौंध में हम संस्कारविहीन होकर दिवान्ध हो रहे हैं। आज हमें न तो ईश्वर का भय है और न ही समाज का। रक्षक कहलाने वाले स्वयं ही भक्षक बन रहे हैं।

आज हमारे आदर्श महापुरुष नहीं हैं। नर्तक नर्तकियों, क्रिकेटरों के चरित्र, वेश-भूषा, आहार से शिक्षा लेकर उनका अंधानुकरण कर रहे हैं। शहरों, कस्बों के चौराहों पर नग्नता अश्लीलता खुली परोसी जा रही है। अर्द्धनग्न अश्लील, कामुकता को बढ़ाने वाले फिल्मों के दृष्यों के पोस्टर हर चौराहे पर युवाओं को आकर्षित कर ब्रह्मचर्य की अवस्था में ही व्यभिचारी बना रहे हैं।

सन्तानों के साथ चौराहों पर निकलना मुश्किल हो रहा है, यहाँ तक कि छात्रों की अभ्यास-पुस्तिकाओं के बाहरी आवरण पर भी अर्धनग्न अश्लील कामुकता को बढ़ाने वाले दृश्य छापे जा रहे हैं तथा सभ्य समाज का दम्भ भरने वाले महानुभाव भी इसका विरोध नहीं कर रहे हैं? इस प्रकार के चित्रों के स्थान पर प्रेरणादायक महापुरुषों, देशभक्तों, वैज्ञानिकों के चित्र छापे जायें तो क्या अभ्यास पुस्तिकाएँ नहीं बिकेंगी? अभ्यास पुस्तिका छापने वालों के प्रति किसी अभिभावक या संस्था ने क्या कोई आवाज उठाने का साहस किया?

आज सद्संस्कारों के अभाव में नैतिक, चारित्रिक, सामाजिक पतन हो गया है और हममें आत्मबल बचा ही नहीं है, फिर हम कैसे साहस कर सकते हैं? अपने सन्तानों का उचित मार्गदर्शन कैसे कर सकते हैं, क्योंकि आज हम ऋषिपुत्र न होकर मैकालेपुत्र बन गये हैं। मैकाले की शिक्षा पद्धति का दुष्परिणाम हमारे सामने आ गया है। गली मोहल्ले में अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय कुकरमुत्ते की तरह फैल रहे हैं और हम अपने हाथों से ही सभी भाषाओं की जननी संस्कृत एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी को तिलांजली दे रहे हैं। शिक्षा का माध्यम वही भाषा होती है, जिस भाषा में व्यक्ति को स्वप्न आते हैं। अंग्रेजी माध्यम के व्यक्ति को स्वप्न अंग्रेजी में नहीं आते अपितु अपनी ही भाषा में आते हैं। आज हिन्दी दिवस के आयोजनों में भी अंग्रेजी हावी रहती है।

बाल अवस्था में ही बच्चों के चरित्र से खिलवाड़ किया जा रहा है तथा ब्रह्मचारी के स्थान पर व्यभिचारी बनने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। ब्रह्मचर्य की महत्ता पर कोई भी ध्यान नहीं है, इस प्रकार के वातावरण पर देश के कर्णधार, बुद्धिजीवी, शिक्षक, महिला संगठन सभी मौन हैं। सामाजिक संगठन, धार्मिक संगठन, मानवतावादी संगठनों की क्या मजबूरी है या मौन स्वीकृति है? मैं समझता हूँ कि मौन स्वीकृति ही है, तभी तो सभी मौन हैं।

आज हमारी शिक्षा केवल रोजगारपरक शिक्षा रह गयी है। नैतिकता, चरित्र-निर्माण, समाज को सद्ज्ञान देने वाली संस्थाओं का अभाव होता जा रहा है। मानवता का ज्ञान देने वालों का नितान्त अभाव है जबकि वेदों में मनुर्भव का सन्देश दिया गया है। स्वयं मां-बाप भी आज कम दोषी नहीं जो अपने संतानों की वेशभूषा पर ध्यान न देकर स्वयं उनको आधुनिकता के नाम पर रसातल में धकेल रहे हैं। तरह-तरह के फैशन वाले वस्त्र दुश्चरित्रता की ओर प्रेरित कर रहे हैं।

वस्त्र शरीर को ढकने के लिए हैं न कि अंग प्रदर्शन के लिए। भाषा, भोजन और वेशभूषा से ही चरित्र निर्माण होता है जिससे कि मनुष्य में सद्गुण, शिष्टाचार, नम्रता, दयाभाव, परोपकार आदि गुण आते हैं। जीवन का आधार सद्गुण ही हैं, जिसके पास जितने सद्गुण हैं, वह उतना ही धनवान है, जिसके अन्दर सद्गुणों की पूंजी भरी पड़ी है, आत्मबल और आत्मविश्वास है उसके लिए दैवी सहायता भी उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है।

बहुत से लोग अच्छे मंहगे फैशन वाले वस्त्रों के प्रयोग को ही सभ्यता एवं शिष्टाचार का मुख्य अंग समझते हैं। मंहगी अच्छी फैशन वाली पोशाक पहनने वाला व्यक्ति जरूरी नहीं कि सभ्य, शिष्ट हो। आज समाज से शिष्टता दूर होकर उच्छृंखलता बढ़ती जा रही है। सद्व्यवहार सदाचार का लोप होता जा रहा है। समाज से विनम्रता और मधुरता युक्त व्यवहार दिन प्रतिदिन दूर होते जा रहे हैं, सहनशीलता दिन-प्रतिदिन घटती जा रही है।

शिष्टाचार, सदाचार, सद्व्यवहार ऐसे गुण हैं, जो अभ्यास एवं आचरण द्वारा ही प्राप्त किये जा सकते हैं, बाजार से खरीदे नहीं जा सकते हैं। हमें अपने चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करना चाहिए, जिससे कि हमारा चरित्रनिर्माण हो सके। सद्चरित्र ही मानवता की कुंजी है, जो देश, समाज को दिशा प्रदान कर सकती है।

आज युवा दिग्भ्रमित होकर नशाखोरी, फैशन परस्ती के आधुनिक वातावरण में केवल रोजी रोटी के जुगाड़ में लगे हुए हैं, जबकि युवा ही देश की रीढ़ है। युवाओं के कंधों पर ही देश का भार है। युवा ही देश के भाग्य निर्माता हैं। युवाओं में राष्ट्रभक्ति, स्वदेशी चिन्तन, परोपकार का नितान्त अभाव होता जा रहा है। देश में चारों ओर अनाचार, दुराचार, भ्रष्टाचार, अश्लीलता का वातावरण व्याप्त है। युवा युवतियाँ ही माँ-बाप के शत्रु बनकर अपने ही परिवारों को अपने ही हाथ से परलोक भेज रहे हैं तथा युवा-युवतियाँ प्रेमान्ध होकर एक दूसरे के रक्त पिपासु बन गये हैं। शिक्षण संस्थायें प्रेमागार बनकर रह गयी हैं। संस्कार वेदी की कोई महत्ता नहीं रह गयी है। विवाह संस्कार में जहाँ पर मधुपर्क पान होता था वहाँ सुरा पान में कोई संकोच नहीं है।

प्रतिदिन समाचार पत्र इन घटनाओं से भरे मिलते हैं कि घरवालों ने प्रेमी प्रेमिका को मौत के घाट उतार दिया, लड़की ने प्रेम में रोड़ा बने माँ-बाप को ठिमाने लगाया, चार बच्चों की माँ प्रेमी के साथ रफूचक्कर, फेरों की तैयारी के चलते लड़की पिछले दरवाजे से रफूचक्कर। यदि शादी भी हो गयी और ससुराल पक्ष ने यदि कुछ कहा अथवा किसी बात पर अंकुश लगाने का प्रयास किया तो दहेज के आरोप लगाकर जेल में सड़ा दिया जाता है।

इस अन्धे प्रेम में आज सामाजिक संगठन, महिला संगठन, पुलिस, न्याय के रखवाले केवल अबला समझ कर लड़कों के परिवार वालों पर कहर ढा रहे हैं, कहीं लड़के प्रेमान्ध होकर बहु को रोड़ा समझ कर रास्ते से हटा रहे हैं।

आज मनुष्य का लक्ष्य केवल अर्थवाद, कामुकता ही विशेष है, उसके पास आध्यात्मिक चिन्तन, सद्ग्रन्थों के अध्ययन का समय ही नहीं है, केवल चार्वाक संस्कृति पर विश्वास है। खाओ, पीओ, मजे लो। जो कुछ है यहीं पर है, आगे किसने देखा है जिस देश में ग्राम में रहने वाली किसी भी वर्ग जाति की लड़की को बहन बेटी की दृष्टि से देखा जाता था, जहाँ गोत्र का भी बचाव था। आज उस देश में रिश्ते-नाते कलंकित हो रहे हैं, रिश्ते के भाई-बहन भी कलंकित हो रहे हैं। खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता ही है।

शहरों ने ग्रामों को भी बरबाद कर दिया है। फैशनपरस्ती चरित्र को दूषित करती है। जो स्त्री-पुरुष शरीर को ढक कर चलते हैं, वे पिछड़े, बैकवर्ड कहलाते हैं, नग्नता का प्रदर्शन करने वाले आधुनिक, सभ्य स्टेटस वाले कहलाते हैं।

टी. वी., मोबाईल तथा सोशल मीडिया के अश्लील दृश्य ही विशेष कारण हैं। इतने पर भी योग शिक्षा के स्थान पर यौन शिक्षा का क्या औचित्य है?

आज अपनी संस्कृति, संस्कार, अपनी भाषा, वेशभूषा, रीति-रिवाज, अपना भोजन अपने ही देश में पराये होते जा रहे हैं और हम विदेशी संस्कृति के ध्वजवाहक बने हुए हैं। विदेशी संस्कृति का प्रचार-प्रसार हम स्वयं ही कर रहे हैं। हमारे यहाँ शुभ अवसरों पर माँ, बहन, बेटी बाजारों में डी. जे. पर नृत्य कर रही हैं, हम ताली पटका रहे हैं। क्या यही भारतीय संस्कृति है? क्या यही महापुरुषों के स्वप्नों का भारत है?

अब समय आ गया है कि समाज को अपनी पूर्ण शक्ति अश्लीलता के वातावरण को दूर करने में लगानी चाहिए। आज समाज को जितनी हानि अश्लीलता के वातावरण से हो रही है, उतनी अन्य किसी से नहीं। समाज का पथ प्रदर्शन करने वालों का पुनीत एवं परम कर्तव्य है कि बढ़ती अश्लीलता पर साहसपूर्वक अंकुश लगाने में अपना योगदान दें तथा सच्चे भारतीय आर्य बनकर पुनः भारत की खोई हुई गरिमा को लौटाएँ तथा सभ्य, शिष्ट समाज का निर्माण करके भारत को पुनः विश्वगुरु के आसन पर आसीन करें और वेदों के उद्घोष कृण्वन्तो विश्वमार्यम् को साकार करें।

परिवर्तन तो होना ही है आज नहीं तो कल होगा।
पर शिखण्डियों की आंखों में प्रायश्चित का जल होगा।

सार्वदेशिक सभा द्वारा चारों दर्शनों एवं संस्कार विधि का पुनर्प्रकाशन

भाष्यकार तर्क शिरोमणि – स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

1. वेदान्त दर्शन – पृष्ठ 232 – मूल्य 100 रुपये
2. वैशेषिक दर्शन – पृष्ठ 248 – मूल्य 100 रुपये
3. न्याय दर्शनम् – पृष्ठ 240 – मूल्य 100 रुपये
4. सांख्य दर्शन– पृष्ठ 156 – मूल्य 80 रुपये
5. संस्कार विधि – पृष्ठ 278 – मूल्य 90 रुपये

बढ़िया कागज, सुन्दर प्रिंटिंग व आकर्षक टाइटल के साथ 25 प्रतिशत छूट पर सभा कार्यालय में उपलब्ध है।

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

आर्य समाज हिम्मतपुर, काकामई, एटा (उ. प्र.) का उद्घाटन समारोह

आर्य समाज के संस्थापक, महान समाज सुधारक, क्रांतिकारियों के प्रेरणास्रोत, दलितोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की विचारधारा को ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचार–प्रसार के उद्देश्य से स्थापित "आर्य समाज हिम्मतपुर काकामई, एटा (उ.प्र.)" का उद्घाटन समारोह दिनांक 11, 12 व 13 मई, 2022 (बुधवार, बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार) की तिथियों में होगा।

कार्यक्रम प्रतिदिन प्रातः 10 बजे से सायं 5 बजे तक होगा।

कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य डॉ. वागीश जी के ब्रह्मत्त्व में वैदिक यज्ञ के माध्यम से किया जाएगा, जिसमें भजन, वैदिक प्रवचन एवं आर्य समाज के सिद्धांतों पर विशेष रूप से चर्चा होगी। इस अवसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा राष्ट्र एवं समाज को दिए गए योगदान तथा आगामी योजनाओं पर विस्तार से चर्चा होगी।

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से राज्यसभा सांसद श्री हरनाथ सिंह यादव, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य, प्रसिद्ध समाजसेवी ठाकुर विक्रम सिंह सहित अनेक वैदिक विद्वान् एवं राजनेता भाग लेंगे। कार्यक्रम का कुशल संयोजन आर्य पुरोहित सभा, नई दिल्ली के प्रधान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी करेंगे।

कार्यक्रम स्थल – ग्राम–हिम्मतपुर काकामई, जनपद–एटा, उत्तर प्रदेश
गूगल मैप लोकेशन लिंक : https://t.co/J5ooyPmK3H

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य समाज महर्षि दयानन्द धाम, अमृतसर, पंजाब के तत्वावधान में गरीब परिवारों को राशन वितरण कार्यक्रम का भव्य आयोजन हुआ सम्पन्न

अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करें। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारूण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी चले जावें परन्तु इस मनुष्यपन रूप धर्म से पृथक कभी न हो। अर्थात् कहने का तात्पर्य यह है कि गरीबों की सेवा सही मायने में धर्म और परोपकार है।

श्री ओम प्रकाश आर्य ने इस अवसर पर अपने ओजस्वी व्याख्यान के द्वारा लोगों को घर–घर वेद पहुँचाने की प्रेरणा दी और उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द जी 200वीं जन्म शताब्दी 2025 तक 'स्वाध्याय–संदोह' पुस्तक को घर–घर पहुंचायेंगे। उन्होंने कहा कि आर्य समाज मानव मात्र के कल्याण के लिए कृत संकल्प है। आर्य समाज हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई आदि सम्प्रदायों में बंटे लोगों से ऊपर उठकर एक वैश्विक विचारधारा का पोषक है और वसुधैव कुटुम्बकम् को चरितार्थ करना चाहता है। कार्यक्रम में श्री सुरेन्द्र सिंह गुलशन और नरेन्द्र पंछी के सुन्दर गीतों का भी कार्यक्रम रहा।

श्री अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट ने अन्त में आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद देते हुए स्वामी जी को आश्वस्त किया कि पूरे पंजाब में वे आर्य समाज की गतिविधियों तथा वेद प्रचार को प्रत्येक तबके और शहर तक पहुंचाने का कार्य करेंगे। इस पूरे कार्यक्रम में सर्वश्री प्रवीण आर्य एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती उमा आर्या, श्री इन्द्रपाल आर्य (आर्य समाज लक्ष्मणसर चौक), श्री इन्द्रजीत ठुकराल (आर्य समाज पुतलीघर), श्री परमजीत सिंह एडवोकेट (जालन्धर), श्री रामपाल आर्य (धूरी), श्री गौरव सरीन एडवोकेट एवं श्री गगन सरीन (नवांशहर) आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही। पूरे कार्यक्रम में आर्य महिला परिषद् की संयोजक श्रीमती सुलोचना आर्या, श्री अशोक वर्मा, उत्साही नवयुवक आर्यमन, डॉ. अंजू आर्या आदि की विशेष भूमिका रही। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

श्रीमती रानी देवी धर्मपत्नी श्री सूबेदार भीष्मदेव आर्य का असामयिक निधन

मथुरा निवासी श्री सूबेदार भीष्मदेव आर्य (वर्तमान में स्वामी व्रतानन्द सरस्वती) की सहधर्मिणी श्रीमती रानी देवी जी का गत 5 अप्रैल, 2022 को असामयिक निधन हो गया। उनकी अन्त्येष्टि 6 अप्रैल, 2022 को पूर्ण वैदिक रीति से की गई। 77 वर्षीय श्रीमती रानी देवी एक धर्म परायणा, सात्विक एवं पवित्र विचारों से ओत–प्रोत व्यक्तित्व की धनी थीं। उनकी शादी सूबेदार भीष्मदेव आर्य जी के साथ 4 जून, 1966 को हुई। शादी के तीन वर्ष बाद श्री भीष्मदेव आर्य सेना में भर्ती हो गये और सूबेदार के पद तक पहुँचकर सेवानिवृत्त हुए। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रानी देवी यद्यपि अशिक्षित थीं, क्योंकि उस समय स्त्रियों की शिक्षा बहुत कम होती थी, फिर भी वह आचार–विचार तथा व्यवहार से एक सभ्य एवं सुसंस्कृत देवी थीं। श्री भीष्मदेव आर्य जी के पूज्य पिता जी आर्य समाजी थे। उन्होंने रानी देवी को मूर्ति पूजा व अन्य अन्धविश्वास से हटाया और उन्हें वैदिक विचारधारा से अवगत कराया। उसके पश्चात् रानी देवी पूर्ण आर्य जीवन बिताने लगीं। गत कई दिनों से वह अस्वस्थ चल रहीं थीं, इसी बीच उनके पति श्री भीष्मदेव आर्य ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम में संन्यास की दीक्षा लेकर स्वामी व्रतानन्द सरस्वती बन गये। संन्यासी बनने के उपरान्त स्वामी व्रतानन्द जी ने घर के कार्यों से अपने आपको मुक्त कर लिया और सभी दायित्व अपने पुत्रों के ऊपर डाल दिया, किन्तु 5 अप्रैल, 2022 को उन्हें अपने जीवन साथी (धर्मपत्नी) की मृत्यु का समाचार मिला, जिससे वे दुःखी तो हुए किन्तु ईश्वर की व्यवस्था को हृदयंगम कर उन्हें भावभीनी विदाई दी। श्रीमती रानी देवी अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़कर गई हैं। उनके निधन से परिवार एवं समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है, किन्तु ईश्वर के नियम के समक्ष नतमस्तक होने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं है। स्वामी व्रतानन्द जी ने बताया कि उनके परिवार को संस्कारित और व्यवस्थित रखने में उनकी देवी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा और वे पूरे घर की व्यवस्था को बड़ी कुशलता के साथ संभालती रही। उन्होंने कहा कि मैं तो पहले सेना में और उसके पश्चात् सामाजिक कार्यों में ही अधिक व्यस्त रहा और घर की तरफ बहुत कम ध्यान दिया किन्तु श्रीमती रानी देवी ने मुझे घर की जिम्मेदारियों से मुक्त रखा और सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहने की प्रेरणा दी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से मैं जहाँ दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ वहीं शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी सांत्वना व्यक्त करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि परिवारजनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति दें।

– स्वामी आर्यवेश, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।